पाठ्यक्रम चौपाल की सामग्री नहीं होती

''राजस्थान के प्राथमिक व माध्यमिक स्कूल शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनानी ने कहा कि राजस्थान में अगले शैक्षणिक सत्र में भगवान परशुराम के बारे में एक अध्याय जोड़ा जायेगा और उनकी जीवनी को पुस्तकालय में रखा जायेगा। अजमेर में भगवान परशुराम के जन्मदिवस पर आयोजित एक समारोह को सम्बोधित करते हुए देवनानी ने कहा कि भगवान परशुराम के बारे में एक अध्याय को जोड़ने की प्रक्रिया इसी साल शुरू की जायेगी और अगले शैक्षणिक सत्र से स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम में इसे जोड़ दिया जायेगा।''[1]

''मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 'पद्मावती' को राज्य की स्कूली किताबों के पाठ्यक्रम में शामिल करने की घोषणा कर तो दी, लेकिन इस लिस्ट में पहले से ही शंकराचार्य, राजा छत्रसाल, झलकारी बाई जैसी महान हस्तियां हैं।''[2]

इस तरह की खबरें शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए चौंकाने से ज्यादा चिंता पैदा करने वाली हैं। क्योंकि पाठ्यक्रम में क्या जोड़ा जाए और क्या हटाया जाए इसका फैसला जनभावना के आधार पर किसी सार्वजनिक सभा में घोषणा करके नहीं किया जा सकता। पाठ्यक्रम में किसी अध्याय के जुड़ने, ना जुड़ने संबंधी निर्णय से पहले हमें इस सवाल का जवाब ढूंढ़ना होगा कि किसी पाठ को पाठ्यक्रम में जोड़ने का आधार क्या है? इस सवाल का जवाब कम से कम जनभावना तो नहीं हो सकता इतना तय है। इसका जवाब देने के लिए हमें कुछ और सवाल करने होंगे। मसलन-

1. समाज को लेकर हमारी आकांक्षाएं क्या हैं?
2. ज्ञान मीमांसीय आधार क्या है?
3. सीखने के बारे में धारणाएं क्या हैं?
4. बच्चे का परिवेश क्या है?

पहला सवाल हमें यह तय करने में मदद करता है कि जिस पाठ या विषयवस्तु को हम पाठ्यक्रम में जोड़ना चाहते हैं क्या वह हम जिस मानवीय समाज की आकांक्षा संजोए हैं उससे तालमेल रखती है। यहां समाज की आकांक्षा से आशय है कि हम किस तरह की सामाजिक-राजनैतिक चेतना से लैस समाज की उम्मीद संजोते हैं और उस चेतना को हासिल करने के लिए किस तरह के मूल्य व क्षमताएं मनुष्य में होनी जरूरी समझते हैं। इन्हें हम शिक्षा के हमारे व्यापक लक्ष्यों के रूप में भी रख सकते हैं। चूंकि हम एक लोकतांत्रिक समाज हैं ऐसे में शिक्षा के लक्ष्य कुछ इस तरह के हो सकते हैं -

- लोकतांत्रिक मूल्यों (जैसे- बराबरी, न्याय इत्यादि) के विकास में मददगार होना।
- आज के मानवीय समाज में जीवन यापन करने के लिए आवश्यक क्षमताओं व कौशलों के विकास में मददगार होना।

दूसरा सवाल हमें ज्ञान की प्रकृति की ओर ले जाता है कि दरअसल मानवीय ज्ञान में विविध दायरों का निर्धारण किस तरह होता है। विभिन्न दार्शनिकों ने मानवीय ज्ञान को कुछ मोटे दायरों में विभाजित किया है। यह दायरे इससे तय होते हैं कि ज्ञान के किसी खास दायरे में ज्ञान का सृजन व ज्ञान के सत्यासत्य का निर्धारण कैसे होता है (मोटे तौर पर ये दायरे हैं- गणित, प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इतिहास, नीतिशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, दर्शन शास्त्र। भाषा इन सबके लिए एक आधार का काम करती है इसलिए उसे

इनमें शामिल करने के बजाए इनके लिए आधारभूत शर्त के तौर पर मान सकते हैं)। मसलन- पानी को लेकर कविता जिस तरह के रूपक गढ़ती है विज्ञान पानी को वैसे नहीं देखती। विज्ञान के लिए पानी एक पदार्थ है और उसे वह उसी नज़र से देखती है। कविता की सराहना के जो मानदंड हैं वे विज्ञान में ज्ञान सृजन या ज्ञान के सत्यासत्य के निर्धारण के मानदंड नहीं हैं। कुल मिलाकर यह सवाल हमें ज्ञान के दायरों के आधार पर विषयों का निर्धारण करने में मददगार होता है। बच्चों को ज्ञान के पुनर्सृजन में भागीदारी करते हुए ज्ञान के किसी खास दायरे में कैसे ज्ञान सृजन होता है यह सीखना होता है तभी यह उम्मीद की जा सकती है कि वे आगे चलकर मानवीय ज्ञान के विभिन्न दायरों में नया ज्ञान सृजित करने की काबिलियत विकसित कर पाएं व नया ज्ञान सृजित कर पाएं। अतः विषयों व विषयवस्तु का चयन करते समय यह ध्यान रखा जाए कि वे मानवीय ज्ञान के व्यापक दायरों का प्रतिनिधित्व करते हों।

तीसरा सवाल हमें सीखने की मनोवैज्ञानिक धारणाओं से मिलता है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि दरअसल सीखना क्या होता है और उम्र के किस पड़ाव पर किस तरह से सीखना होता है। बच्चे जब स्कूल में आते हैं तो उनके पास अपना एक ज्ञान आधार होता है, अपनी भाषा होती है, उनकी रुचियां होती हैं। भाषाई ज्ञान व इस दुनिया से अन्तर्क्रिया सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उम्र के किस दौर में किस तरह का अमूर्तन संभव है यह बात हमें हमारे सीखने-सिखाने के तौर-तरीके व पाठ्यसामग्री (जिसमें से पाठ्यपुस्तक भी एक है) विकसित करने में मददगार होती हैं। इसी आधार पर हम तय कर पाते हैं कि छोटे बच्चों को गणित में संख्या की अवधारणा विकसित करने में मदद करने के लिए ठोस चीजों का उपयोग किया जाना चाहिए। बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में चित्र होने चाहिए, उनकी पाठ्यपुस्तकों में अन्तर्क्रिया संभव बनाने वाले अभ्यास होने चाहिए और ऐसी विषयवस्तु का चयन होना चाहिए जो उनकी रुचि की हो। इसी आधार पर हम विषयों की शुरुआत कक्षाओं के स्तर के हिसाब से कर पाते हैं। आरंभ में विषय के तौर पर भाषा एवं गणित को रखते हैं और अन्य विषयों से संबंधित गतिविधियों को इन्हीं के अंतर्गत रखते हैं। प्राथमिक स्तर पर विज्ञान व सामाजिक विज्ञान को एक मोटे दायरे के रूप में पर्यावरण अध्ययन के अन्तर्गत रखते हैं और उच्च प्राथमिक स्तर पर ठीक से विषयों के तौर पर विभाजन करते हैं।

चौथा सवाल बच्चे के प्राकृतिक एवं सामाजिक परिवेश के बारे में सचेत रहने के बारे में है। यह हमें बताता है कि नया सीखना-सिखाना बच्चे के मौजूदा भाषाई क्षमताओं एवं ज्ञान व कौशलों के मौजूदा स्तर को ध्यान में रख कर व इनसे जोड़ते हुए किया जाना चाहिए। हमें विभिन्न विषयों की पाठ्य सामग्री में किन मुद्दों का चयन करना है इसका निर्धारण बच्चे के परिवेश को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए साथ ही उसका ज्ञान मीमांसा के आधार व शिक्षा के लक्ष्यों के साथ तालमेल भी होना चाहिए। यानी उसे मानवीय ज्ञान के व्यापक दायरों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए व शिक्षा के लक्ष्यों के साथ उसका तालमेल होना चाहिए।

सवाल यह है कि उक्त दोनों खबरों में जिन पाठों (परशुराम व पद्मावती) को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात कही गई है क्या वे हमारे इन चारों सवालों को जवाब दे पाते हैं? हम परशुराम के उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं। परशुराम की जीवनी ज्ञान के किस दायरे में आएगी? जीवनी कल्पना के आधार पर नहीं तथ्यों के आधार पर लिखी जाती है। क्या परशुराम की जीवनी के संदर्भ में यह संभव है? उसके लिए तथ्य कहां से जुटाएंगे? आज परशुराम के बारे में जितनी बातें प्रचलित हैं वे केवल लोक में प्रचलित बाते हैं उनके लिए तथ्य जुटाना संभव नहीं है। परशुराम का अध्ययन एक मिथक के तौर पर तो किया जा सकता है लेकिन एक जीवनी के तौर पर मुमकिन नहीं। मिथक का अध्ययन स्कूली स्तर पर संभव नहीं। इसके लिए जो ज्ञान आधार चाहिए वह विश्वविद्यालय स्तर पर पहुंचने के बाद ही संभव है। दूसरा परशुराम के बारे में जो लोक मान्यताएं हैं क्या वे बराबरी व न्याय का जो लक्ष्य है उससे संगति रखती है? यही सवाल पद्मावती के बारे में भी पूछे जा सकते हैं। हम देख सकते हैं कि पाठ्यक्रम निर्माण कोई चौपाल पर की जाने वाली गप्प-गोष्ठी नहीं होती है। इसे तय करने के कुछ निर्धारित मानदंड व प्रक्रियाएं हैं। ◆

प्रमोद

1. https://khabar.ndtv.com/news/career/life-of-sage-parashuram-to-be-part-of-school-syllabus-1687408
2. https://khabar.ndtv.com/news/india/mp-big-challenge-to-include-padmavati-in-the-course-many-greatmen-in-pre-waiting-1781043